कविता संग्रह

कारवाँ

यह कारवाँ है कविताओं का और सफर है
किशोरावस्था की दहलीज से लेकर युवावस्था की मोड़ तक का

जयदीप शेखर

PREVIEW

कारवाँ

यह कारवाँ है कविताओं का और सफर है किशोरावस्था की दहलीज से लेकर युवावस्था की मोड़ तक का

जयदीप शेखर

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit:
Image by RENE RAUSCHENBERGER from Pixabay.

-: eBook :-

KAARWAAN

(The Camel-train)

Collection of Hindi Poetry composed during teen age.

Author: Jaydeep Shekhar

Copyright: © 2023: Author

Available at: jagprabha.in

Price: ₹ 100.00

अनुक्रम

अपनी बात 6
कवितायें 7
परिवर्तन 7
आह्वान 8
दूर कर दो 9
प्रेतराज 10
क्षणिकायें 11
खून का रिश्ता 11
वज्र 11
सर्प 12
शंखनाद 12
पीऊ कहाँ 13
एक दृश्य 13
चिड़ियाघर में 14
कोई जिन्दा है 14
गजलें 15
मरहम 15
यादें 16
महक 17
तुम्हारे नाम 18
सलाम 19
गुनगुनाया न कीजिये 20
यौवन 21
धोखा 22
न रूठो 23
याद आती है 24
मान भी जाईये 25
मनुहार 26
क्षणिकायें 27
तुम्हारे लिए 27

आह 27
तुम्हारे साथ 27
जी चाहता है 28
तुम्हारी याद 28
दामन 28
साथ 29
आँखें 29
दुपट्टा 29
शरारत 30
नाम 30
मुस्कान 31
शमां 31
लोग गलत समझते हैं 32
कविताये 33
तुम्हारी याद 33
चाहकर भी 35
सावन गीत 36
भ्रमर गीत 37
कोहरा 38
मिलन 41
रुबाईयाँ: मे साकी 43
सुकान्तो भट्टाचार्य की 7 कविताये 49
प्रियतमासु 49
दियासलाई की तीली 52
एक मुरगे की कहानी 54
रनर 56
सीढ़ी 59
सिगरेट 60
1ली मई की कविता '46 62
ये इश्क नहीं आसां 63

अपनी बात

कैशोर्य एवं नवयौवन के दिनों की ये रचनाएं हैं— यानि 30-40 साल पहले की। इनमें कविताएं, क्षणिकाएं, गजलें और रूबाईयाँ शामिल हैं। इन सबकी रचना के लिए कुछ नियम निर्धारित होते हैं, लेकिन जाहिर है कि उन नियमों का पालन इनमें नहीं किया गया है। बस मनोभावों को सीधे-सादे ढंग से कागज पर उतार दिया गया है।

बँगला कवि सुकान्तो भट्टाचार्य की कुछ कविताओं का हिन्दी अनुवाद उन्हीं दिनों में किया गया था, ऐसी 7 कविताओं (अनुवादों) को इस संग्रह में शामिल किया जा रहा है।

मिर्जा गालिब के कुछ शेरों पर आधारित एक काल्पनिक कहानी भी इसमें शामिल है। भले यह 'गद्य' है, लेकिन चूँकि इसमें मिर्जा गालिब के शेर हैं और चूँकि यह रचना भी उन्हीं दिनों की है, इसलिए उसे भी इस संग्रह में शामिल किया जा रहा है।

-जयदीप शेखर
2023, बसन्त ऋतु

कवितायें

परिवर्तन

मातृभूमि के कष्टों को देख
व्यग्र न हो मित्र,
यह तो प्रसव पीड़ा का दौर है
नयी सदी में
नये भारत को जन्म देने के लिए।

यह जो गाढ़ा अन्धकार छाया है
यही तो हरकारा है
उस स्वर्णिम बिहान का।

यह जो नैतिक पतन के प्रति
छायी घोर चुप्पी है
यह और कुछ नहीं,
निर्वात् है निर्वात्!
परिवर्तन की आँधी का संकेत।

आँखें मल लो मित्र,
कि पौ फटा चाहता है।
कमर कस लो मित्र,
कि परिवर्तन हुआ चाहता है।
०००

आह्वान

ऐ मेघराशि तुम वज्र बरसाओ
ऐ धरती तुम कम्पित हो,
ज्वालामुखी तुम जाग्रत हो
अस्त्र-शस्त्र रक्तरंजित हो।

ऐ वायु तुम बनो चक्रवात
महासागर तुम उत्ताल बनो,
हिंस्त्र जीव तुम उन्मत्त हो
ऐ अग्नि तुम विकराल बनो।

हाहाकार सब चीत्कार उठे
ऐ सूर्य तुम प्रचण्ड हो,
भूमिसात् हो सब प्रासाद-कुटीर
ऐ पर्वत तुम खण्ड-खण्ड हो।

विलुप्त हो इस धरा से जीवन
ताण्डव का आह्वान हो,
ध्वंस में छिपे बीज से फिर
निष्पाप जीवन का निर्माण हो।

◊◊◊

दूर कर दो

दूर कर दो मेरी नजरों से
इन धुआँ उगलते कारखानों को
कंक्रीट के इस जंगल को भी
बढ़ने से रोक दो।

इन फैक्ट्रियों और फ्लैटों ने
कब्जा कर लिया है उस जमीन पर
जो पूष के महीने में
पीले कालीन से ढँक जाती थी।
हाँ, मेरे सरसों के पीले फूल
मुझे वापस दिला दो।
वापस कर दो मेरे
महुए के जंगल,
जहाँ चैत की भोर
रसीले महुओं की चादर बिछती थी।

फैक्ट्रियों का यह काला धुआँ
और फ्लैटों की ऊपरी चमक,
मेरी आँखों को नहीं सुहाती।
०००

ऐतराज

ऐ नदी,
तुम्हारे बहाव में हमने
कारखानों के कचरे बहाये
तुम्हारे ऊपर बाँध बनाये हमने
जाने कितनी बस्तियों को डूबोकर।

ऐ पर्वत,
तुम्हारे बदन पर हमने
बुलडोजर चलवाये
तुम्हारी वादियों को उजाड़कर हमने
होटल बनवाये सैलानियों की ऐश के लिए।

ऐ दरख्त,
तुम्हें चीरकर हमने
प्लाइवुड बनवाये
तुम्हारे जंगलों को उजाड़कर हमने
पॉश कालोनियाँ बसाईं अमीरों के लिए।

यह सब किया हमने
अर्थनीति सुधारने के लिए
तरक्की के लिए और
विदेशी मुद्रा कमाने के लिए।
तुम्हे कोई ऐतराज तो नहीं०–
ऐ नदी, ऐ पर्वत, ऐ दरख्त?

०००

क्षणिकायें

खून का रिश्ता

कैसे कहें कि
दोनों से ही खून का रिश्ता था अपना,
एक वो, जिसने खंजर चलाया
दूसरा,
जो तड़प रहा है।
◊◊◊

वज्र

तुमने
हमारे रक्त का शोषण किया।
तुमने
हमारी मज्जाओं का आस्वादन किया।
लेकिन
हमारी अस्थियों को फेंकने से पहले
सोच लो,
कि यह, वही धरती है,
जहाँ अस्थियों से
वज्र भी बनते हैं।
◊◊◊

सर्प

अपने सीने को
जमीन पर घसीटकर रेंगने वाला
सर्प
आघात पाते ही
सीना तानकर फुँफकार उठा
और मरने-मारने को तैयार हो गया।
किन्तु सीना तानकर चलने वाले हम
रौंदे जाने के बाद भी
चुप रहे।
०००

शंखनाद

वंचितों की पुकार
शोषितों का हाहाकार
धर्षिताओं की चीत्कार
पददलितों की फुँफकार,
जिस दिन ये सारे मिलकर
एक हो जायेंगे,
काली दुनिया के ओ काले शासकों,
उस दिन
यह आर्त्तनाद न रहकर
'पाञ्चजन्य' का शंखनाद बन जायेगा।
०००

पीऊ कहाँ

अदालत के अन्दर
तलाक का मुकदमा चल रहा था।
इससे बेखबर
अदालत के बाहर
नीम के झुरमुट से
कोई बार-बार रट लगा रहा था-
''पीऊ कहाँ-पीऊ कहाँ?''
०००

एक दृश्य

एक दृश्य
पहाड़ की तलहटी
हरी-भरी वादी
झूमते पेड़- लहराती घास
रम्भाती गायें, भागती बकरियाँ
छोटी-छोटी झोपड़ियाँ
और.....
आदिवासियों से
लम्बे सेमल के पेड़ों की
कीमत तय करते
कुछ सभ्य लोग!
०००

चिड़ियाघर में

चिड़ियाघर में
छलाँगे मारते बन्दरों को देख
मम्मी-पापा तालियाँ बजा रहे थे।
और
हॉस्टल से छुट्टियों में घर आई
नन्हीं ट्विंकल
बन्दरिया के पेट से चिपके
नन्हें बन्दर को देख
कुछ सोच रही थी।
लेकिन क्या.....?

कोई जिन्दा है

मुर्दों के शहर में
मुर्दों के बीच रहते-रहते
मैं भी मुर्दा हो चला था,
कि देखा-
आषाढ़ की पहली बौछार के बाद
सड़क के किनारे जमे बरसाती पानी में
कागज की एक नाव तैर रही थी।
नहीं-नहीं,
अभी सब मरे नहीं हैं।
अभी भी कोई कहीं
इसी शहर में
जिन्दा है!
०००

मरहम

कल आप कुछ और थे,आज कुछ और हैं
आदमी नहीं, आप तो बदलने वाले मौसम हैं।

अच्छा किया जो खुद को बदल लिया आपने
वक्त के साथ बदल जाना ही तो नियम है।

इन्द्रधनुष पर जा बसने वाले धरती पर
कभी आयेंगे, यह सोचना मेरा वहम है।

बीते हुए दसियों बसन्त आप भूल सकते हैं
फिर क्या याद रखना, जो कल की कसम है।

चाँद को देखकर आपको याद कर लेता हूँ
यही मेरे चोट खाये दिल का मरहम है।

◊◊◊